Read India
An imprint of Pratham Books

मछली ने समाचार सुने

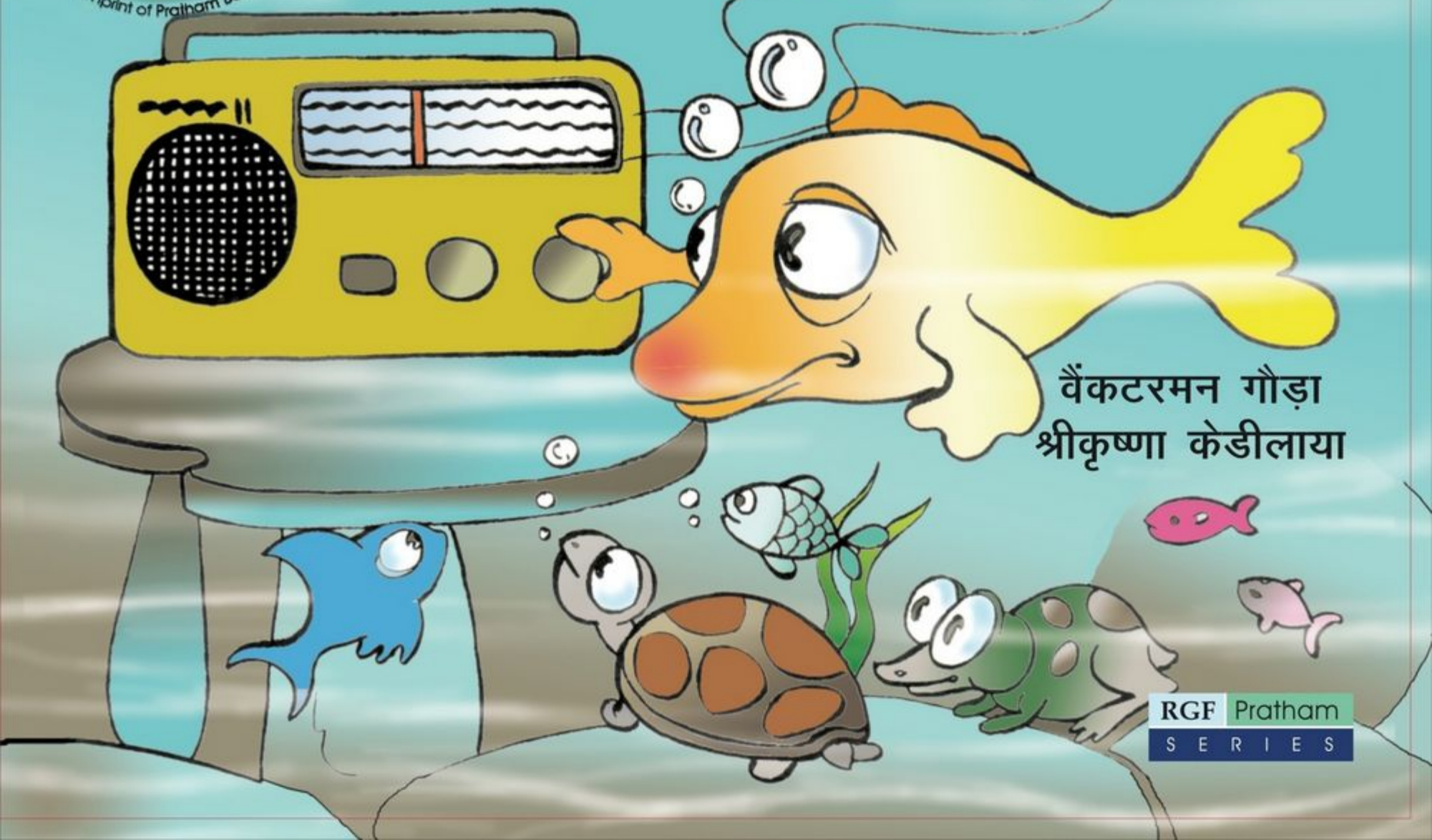

वैंकटरमन गौड़ा
श्रीकृष्णा केडीलाया

RGF Pratham
SERIES

Original Story (*Kannada*) Meenu Kelida Vaarthe by Venkatramana Gowda
© Rajiv Gandhi Foundation – Pratham Books, 2004

Second Hindi Edition: 2009

Illustrations & Design: Srikrishna Kedilaya
Hindi Translation: K. Vijaya

ISBN : 81-8263-145-9

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th "C" Main, 6th 'B' Cross, OMBR Layout,
Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526 and New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Pratham Books, New Delhi

Printed by: Pentaplus Printers Pvt. Ltd., Bangalore

Published by:
Pratham Books | www.prathambooks.org

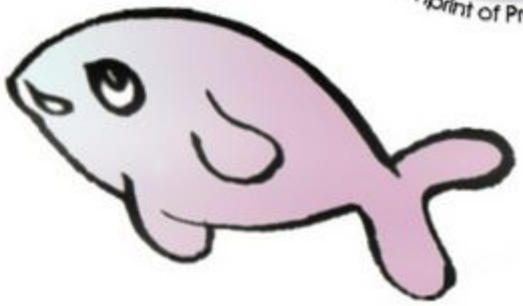

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

मछली ने समाचार सुने

लेखन : वैंकटरमन गौड़ा
चित्रांकन : श्रीकृष्णा केडीलाया
हिन्दी अनुवाद : के. विजया

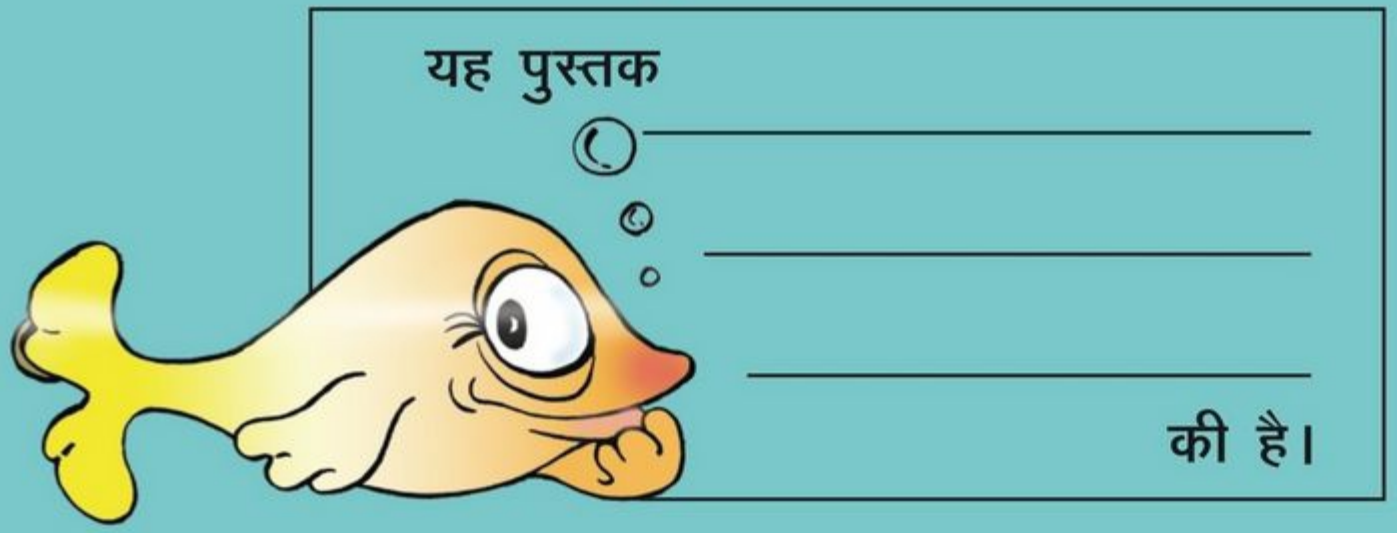

एक छोटा-सा गाँव था। वहाँ एक नदी थी।
उसमें मछली, मेंढक, कछुए सब खुशी खुशी
रहते थे। मछलियों का परिवार बहुत बड़ा था।

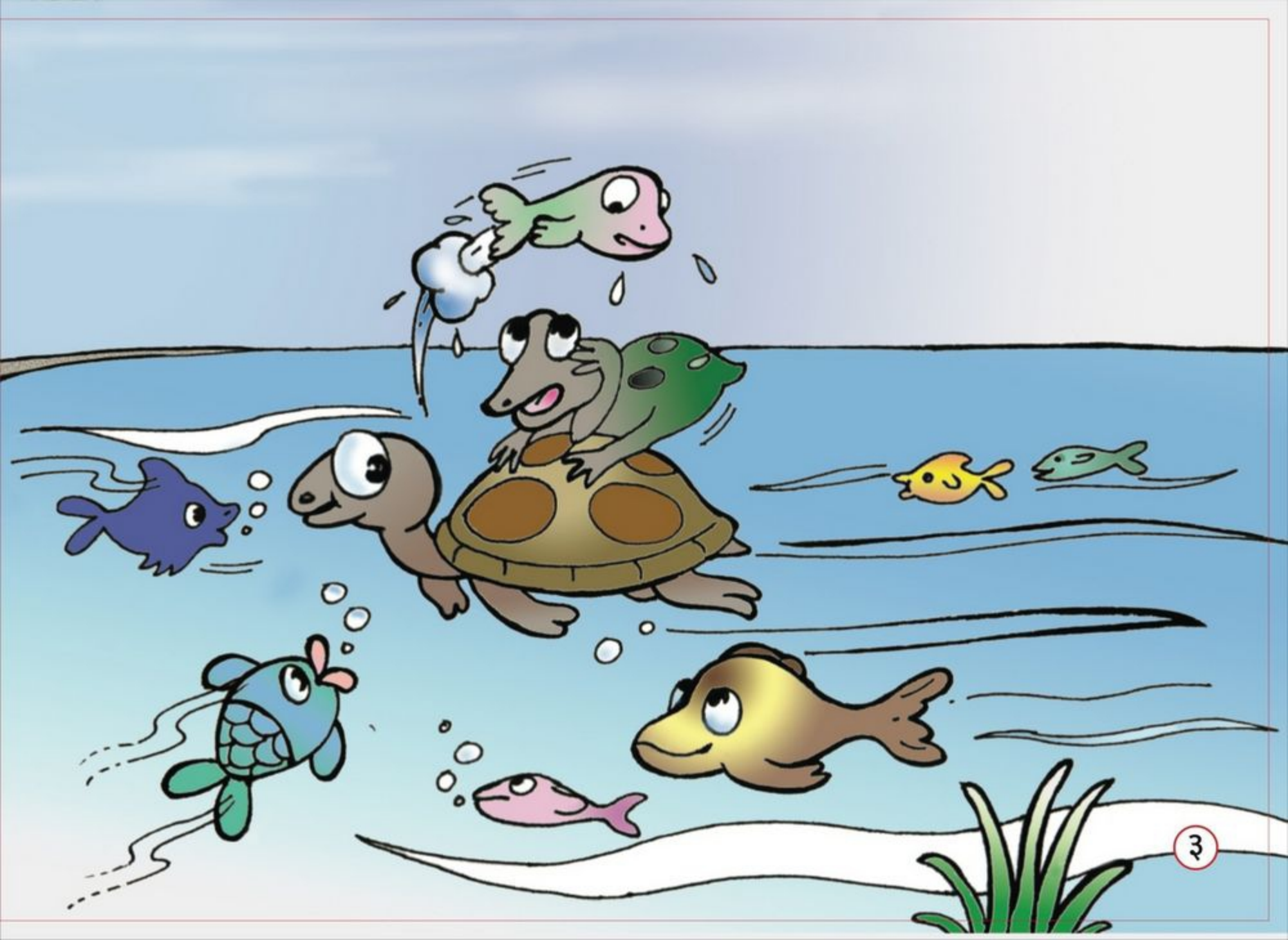

मेंढक और कछुए, मछली के परिवार को बड़ी इज्ज़त देते थे। मछलियों के घर में एक बड़ा-सा रेडियो था। उनकी इज्ज़त इससे और भी बढ़ गई थी।

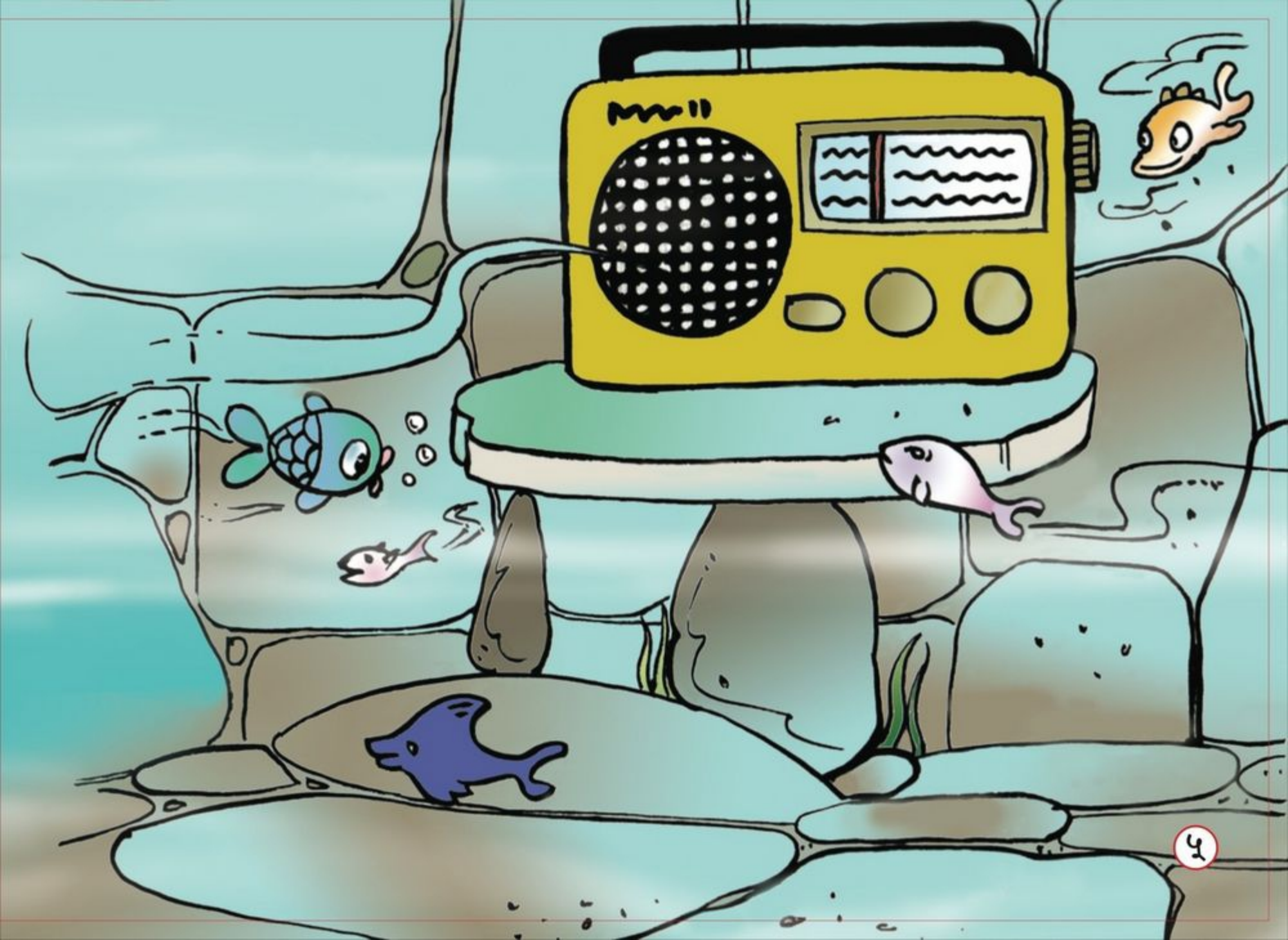

मछलियों के घर एक बुजुर्ग मछली थी जिसका कहना मेंढक और कछुए भी मानते थे। उसे सब दादा कहते थे। लेकिन कोई भी उसे रेडियो सुनने का मौका नहीं देता था। फ़िल्मी गीत सुनना सभी को बहुत पसंद था। छोटी-छोटी मछलियाँ, मेंढक और कछुए हमेशा रेडियो से चिपके रहते।

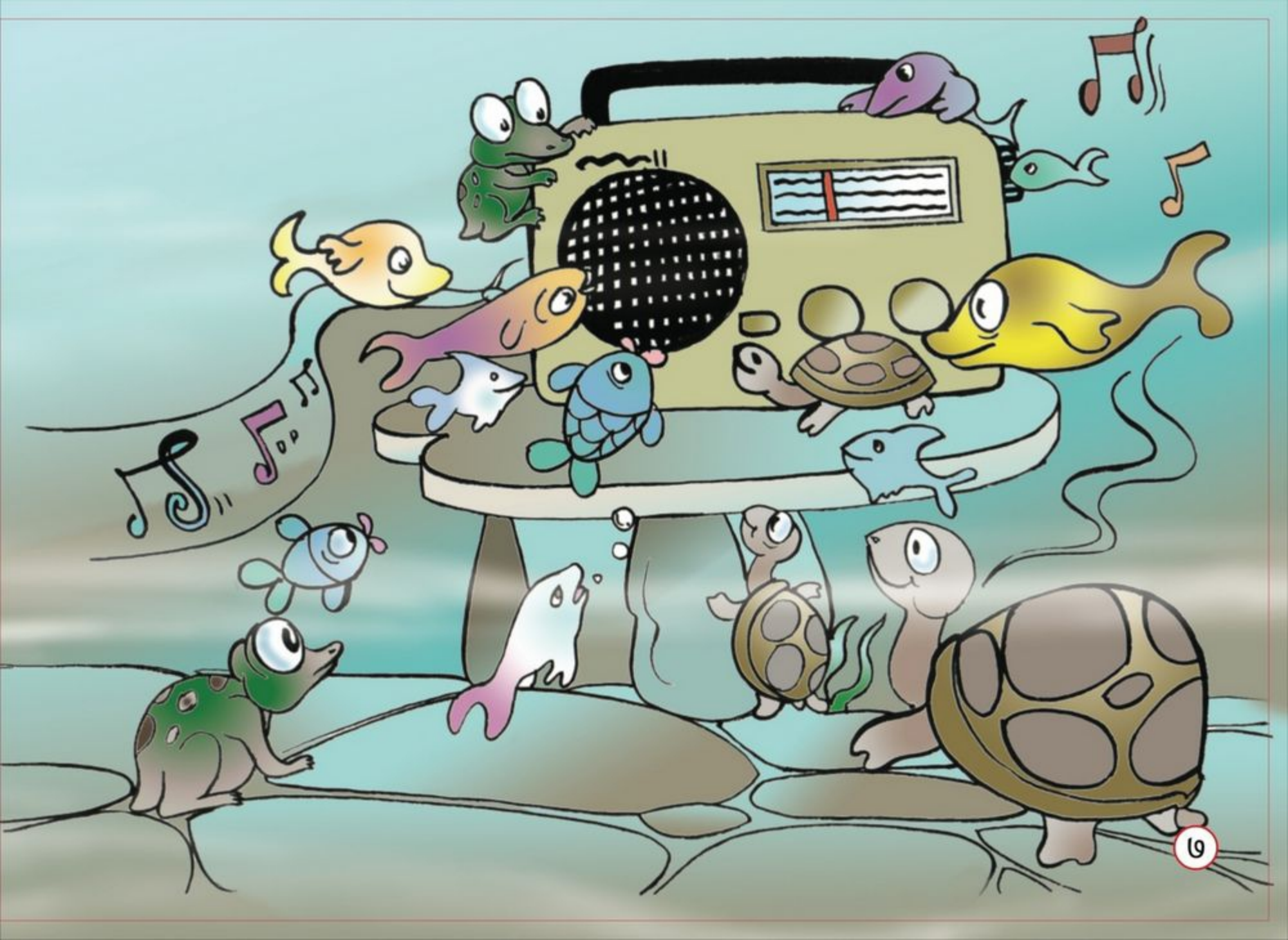

इसीलिए बड़ी मछली रेडियो
पर समाचार सुनने को
तरसती रह जाती।

कई तरह से बच्चों को पटा कर, मिन्नतें कर, जब तक वह बच्चों से रेडियो लेती तब तक समाचार खतम ही हो जाते थे। ''अब समाचार समाप्त हुए,'' बस कभी कभार यही सुनने को मिलता।

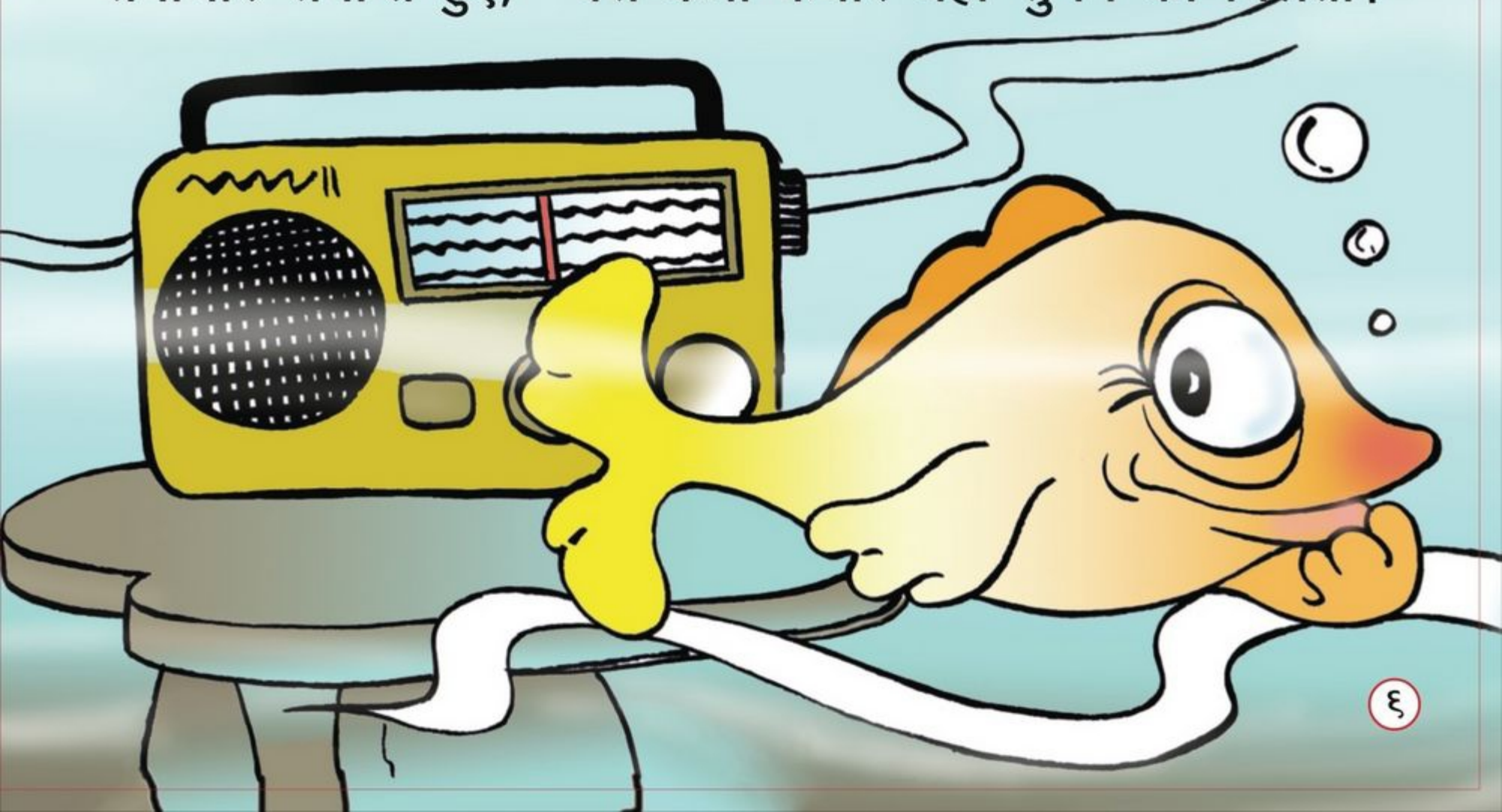

उस दिन भी यही सिलसिला चल रहा था। पर वह समाचार का आखिरी हिस्सा सुन पाई। उसे बहुत खुशी हुई कि कम से कम इतना तो सुनने को मिला।

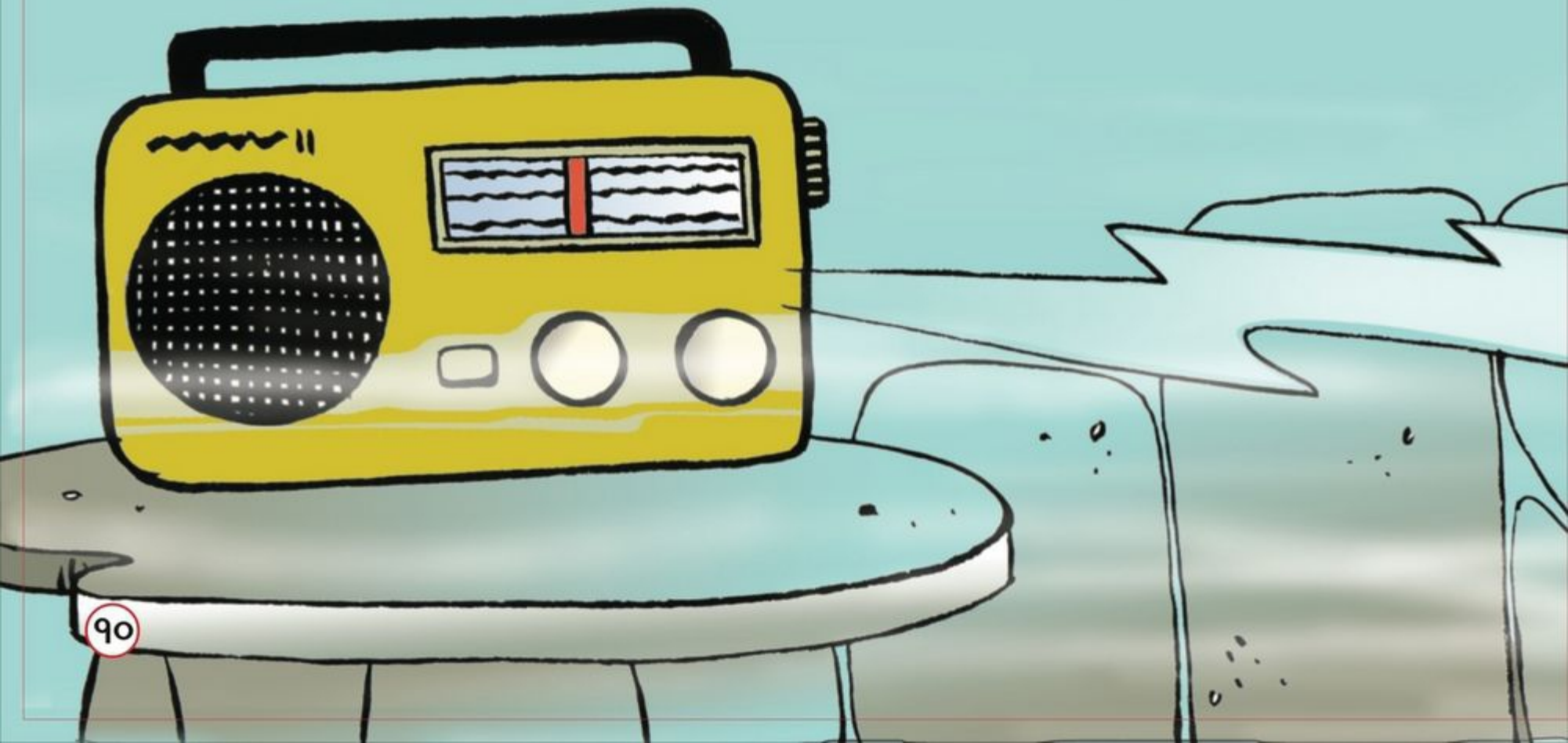

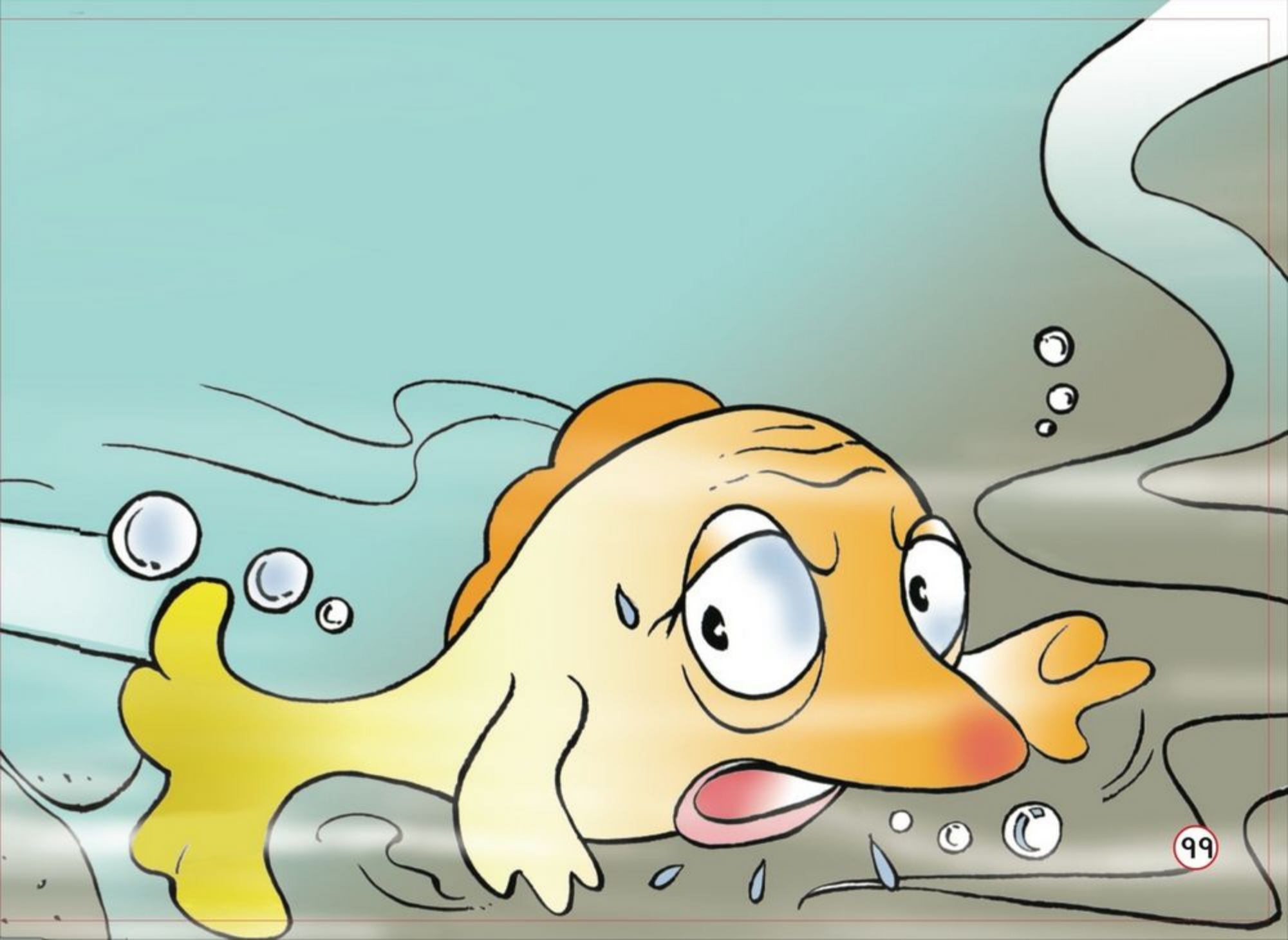

लेकिन वह समाचार तो खुश करने वाला नहीं था, ''नदी में दवाई छिड़क कर मछलियों को पकड़ने वाले आ रहे हैं। अनेकों नदियों से ऐसे ही वे लोग मछलियाँ पकड़ कर ले गये हैं।'' यह सुनकर उसे गहरा धक्का लगा। बाकी मछलियों को भी यह सामचार पता चला।

मेंढक और कछुए भी बहुत डर गए। क्या करें कुछ समझ में नहीं आ रहा था। सब निराश होकर बैठ गये। रोज़ की तरह दादा से रेडियो छीनने कोई नहीं आया। आगे की चिन्ता सभी को सता रही थी।

उसी समय उस शहर के मुखिया की बेटी गगरी उठाए पानी भरने वहाँ आई। मुखिया और दादा मछली अच्छे दोस्त थे। दादा ने उस लड़की से मुखिया को वहाँ आने का सन्देश भिजवाया।

मुखिया तुरंत नदी की ओर चल पड़ा। उसके आते ही दादा ने मुखिया का स्वागत कर उसे बिठाया। घर के भीतर की ओर पुकार कर कॉफ़ी बनाने के लिए कहा। फिर रेडियो पर सुनी बात बताई।

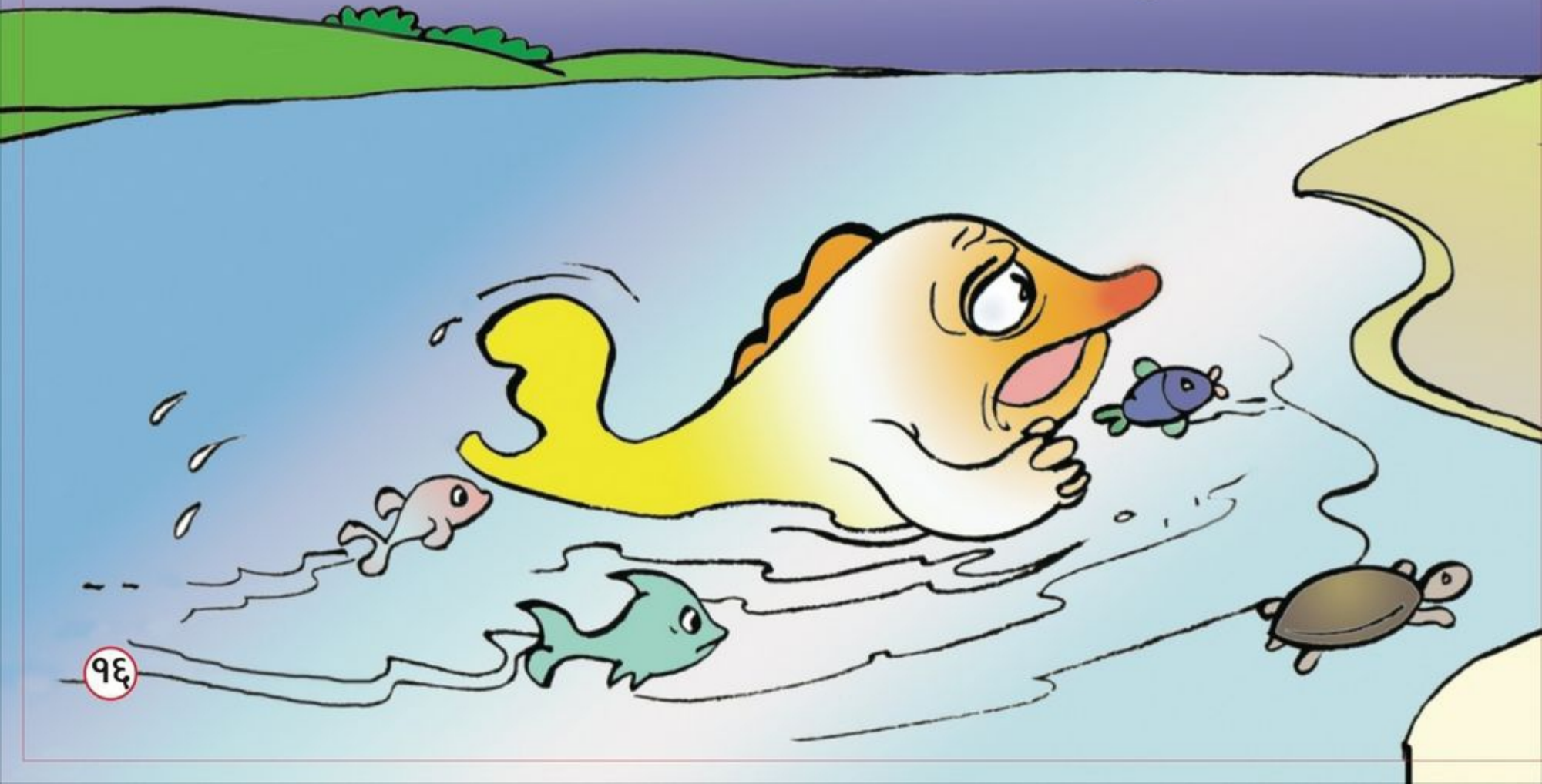

मुखिया घबराया, बोला,
''हाय, ऐसा क्या?''

थोड़ी देर सोचने के बाद उसने कहा, ''आप बिल्कुल चिंता न कीजिए। आपको कोई तकलीफ़ न हो इसकी व्यवस्था मैं करूँगा।'' सभी की मानो जान में जान आई। कॉफ़ी पीकर मुखिया उनको निश्चिंत रहने का ढाँढस बँधा कर घर गया।

सभी को लगा कि दादा मछली
ने अगर उस दिन वह समाचार
न सुना होता तो यह दुर्घटना
घट ही जाती।

सबने निश्चय
किया कि आगे
से दादा का
ख़याल रखेंगे।

इस चित्र में रंग भरो।

इस चित्र में रंग भरो।

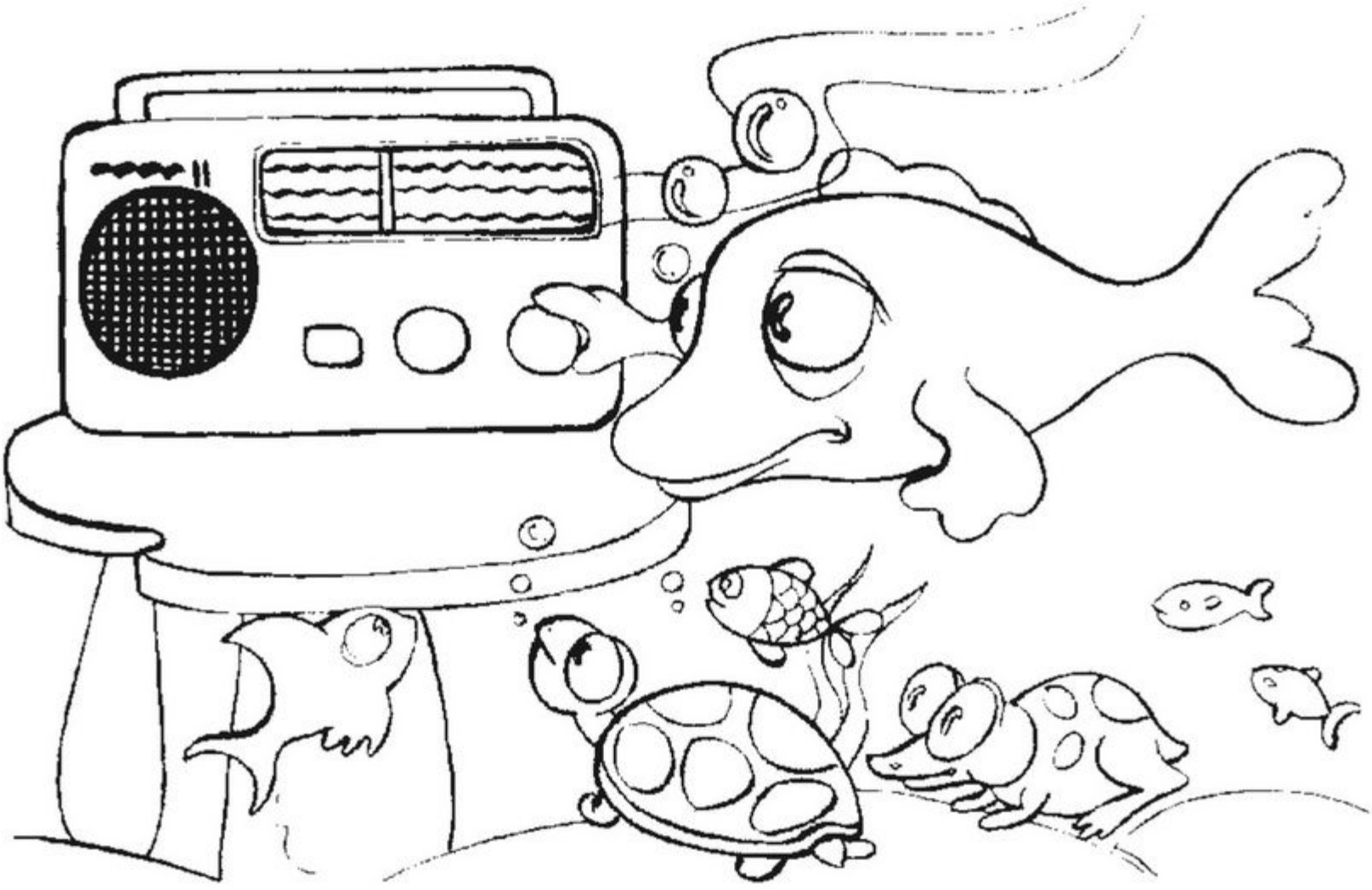

मेरा नाम हरनारायण है और मुझे खेलकूद में बहुत रूचि है। मुझे नये-नये आविष्कार करने वाले लोग अच्छे लगते हैं। कॉमिक की किताबें मेरी मनपसन्द हैं।
यह किताब खरीदने के लिये शुक्रिया। आपने यह किताब खरीदी तो मेरे पुस्तकालय में और भी बहुत सी किताबें आयेंगी जिन्हें मैं और मेरे दोस्त पढ़ सकेंगे।

वेंकटरमण गौड़ ने कन्नड़ में उच्च शिक्षा प्राप्त करी है और वे एक वरिष्ठ पत्रकार हैं। उन्होंने उदयवाणी व विजय कर्नाटक में काम किया है और कुछ समय तक अपनी मासिक पत्रिका का सम्पादन किया। उत्तर कन्नड़ में हलक्की जनजाति के वेंकटरमण अपनी कहानियों व कविताओं में लोक शैली के लिये जाने जाते हैं। वे हैदराबाद में एक टेलिविज़न चैनल में कार्यरत हैं।

श्रीकृष्णा केडीलाया चित्रकार हैं जो दस सालों से एक विज्ञापन एजेंसी में काम कर रहे हैं। उन्होंने कन्नड़ की बहुत सी किताबों का रूपांकन व आवरण सज्जा की है।

मछली परिवार की बैठक में एक बड़ा सा रेडियो है पर छोटी मछलियाँ दादा मछली को उसे सुनने का मौका कहाँ देती हैं! पर एक दिन दादा मछली ने समाचार सुने और शुक्र है कि वह एक बहुत ज़रूरी खबर सुन पाये...

इस शृंखला की अन्य पुस्तकें

नौका विहार • गौरैया और अमरूद • बुलबुलों वाला फेनीला दूध
कौए के रिश्तेदार • राजू और तरकारी • कुहू–कुहू कोयल
कछुआ और खरगोश • स्वाद अनार का • रंग बिरंगी सुंदर मछली

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिये **www.prathambooks.org** पर लॉग आन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिंदी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला, पंजाबी, उर्दू व उड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें प्रकाशित करने वाली ग़ैर मुनाफ़ा प्रकाशन संस्था है।

ISBN 818263145-9

9788182631458

Age Group: 7-10 years
Machli Ne Samachar Sune (Hindi)
MRP: Rs. 20.00